Historical and religious context of Diwali: In view of medieval miniature paintings

दीवाली के ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भः

मध्यकालीन लघु चित्रों की दृष्टि में:

दिलीप कुमार

शोध छात्र] ललित कला

राजा मानसिंह तोमर विश्वविद्यालय] ग्वालियर

भूमिका

भारतीय संस्कृति और परंपराओं में दीवाली का विशेष महत्व है। यह पर्व केवल दीपों का उत्सव नहीं है, बल्कि इसके पीछे गहरे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक अर्थ छिपे हैं। ष्दिया भी मिट्टी का और देह भी मिट्टी कीष् इस उक्ति में दीवाली के वास्तविक मर्म को समझाने का प्रयास किया गया है। यह आलेख इसी संदर्भ में दीवाली की ऐतिहासिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक महत्व को प्रस्तुत करेगा।

दीवाली, जिसे दीपावली के नाम से भी जाना जाता है भारतीय त्योहारों में सबसे प्रमुख है। यह पर्व अंधकार से प्रकाश की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर और बुराई से अच्छाई की ओर जाने का प्रतीक है। दीवाली का पर्व पूरे भारतवर्ष में हर्षोल्लास और धूमधाम से मनाया जाता है। इसके पीछे अनेक धार्मिक और ऐतिहासिक कहानियाँ जुड़ी हुई हैं, जिनमें से सबसे प्रमुख कहानी भगवान राम की लंका विजय के बाद अयोध्या लौटने की है। जब भगवान राम चौदह वर्षों का वनवास समाप्त करके अयोध्या लौटे थे, तब नगरवासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया था। इस घटना को प्रतीक मानकर आज भी दीवाली पर दीप जलाए जाते हैं।

दीवाली का अर्थ केवल घरों को रोशन करना नहीं है बल्कि आत्मा को भी रोशन करना है। दिया भी मिट्टी का और देह भी मिट्टी की इस उक्ति में यह संदेश छिपा है कि जैसे दीया मिट्टी का होता है और उसमें प्रज्वलित आलोक हमारे जीवन में प्रकाश लाता है, वैसे ही हमारी देह भी मिट्टी से बनी है और इसमें आत्मा का आलोक ही जीवन का वास्तविक प्रकाश है। दीवाली का पर्व हमें आत्मा के आलोकित होने का अवसर प्रदान करता है।

दीवाली का सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व भी बहुत बड़ा है। यह पर्व केवल हिन्दू धर्म के अनुयायियों द्वारा ही नहीं, बल्कि जैन, सिख और बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा भी मनाया जाता है। जैन धर्म में, दीवाली को भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है। सिख धर्म में, इस दिन को बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाया जाता है, जब गुरु हरगोविंद जी ने मुगलों के बंदीगृह से ५२ राजाओं को मुक्त किया था। बौद्ध धर्म में, इसे सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने के दिन के रूप में माना जाता है।

दीवाली के धार्मिक और ऐतिहासिक संदर्भों के अलावा, इसका एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक पहलू भी है। यह पर्व हमारे समाज में एकता और भाईचारे का प्रतीक है। दीवाली के समय लोग अपने घरों की सफाई करते हैं, उन्हें सजाते हैं, मिठाइयाँ बनाते हैं, और एक-दूसरे को उपहार देते हैं। यह समय पारिवारिक और सामाजिक बंधनों को मजबूत करने का होता है। साथ ही, यह पर्व नए वर्ष के स्वागत का भी प्रतीक है, विशेषकर व्यापारियों के लिए, जो इस दिन अपने नए वित्तीय वर्ष की शुरुआत करते हैं।

इस प्रकार, दीवाली केवल एक त्योहार नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन को नई दिशा और ऊर्जा देने वाला पर्व है। यह हमें हमारे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक मूल्यों की याद दिलाता है और हमें आत्मा के आलोकित होने का अवसर प्रदान करता है। दीवाली का यह पर्व हमें सिखाता है कि जीवन में सच्चा प्रकाश आत्मा के आलोक में ही है, और हमें इस आलोक को अपने जीवन में अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

मिट्टी का दिया और आत्मदीप

दीवाली के पर्व में मिट्टी के दीये जलाने की परंपरा है। इस दीये की महत्ता को हमारे पूर्वजों ने आत्मदीप के रूप में देखा। मिट्टी की देह और उसमें प्रज्वलित आलोक प्राण का प्रतीक है। दीपावली केवल घरों में उजाला करने का पर्व नहीं है, बल्कि यह आत्मा के आलोकित होने का उत्सव है।

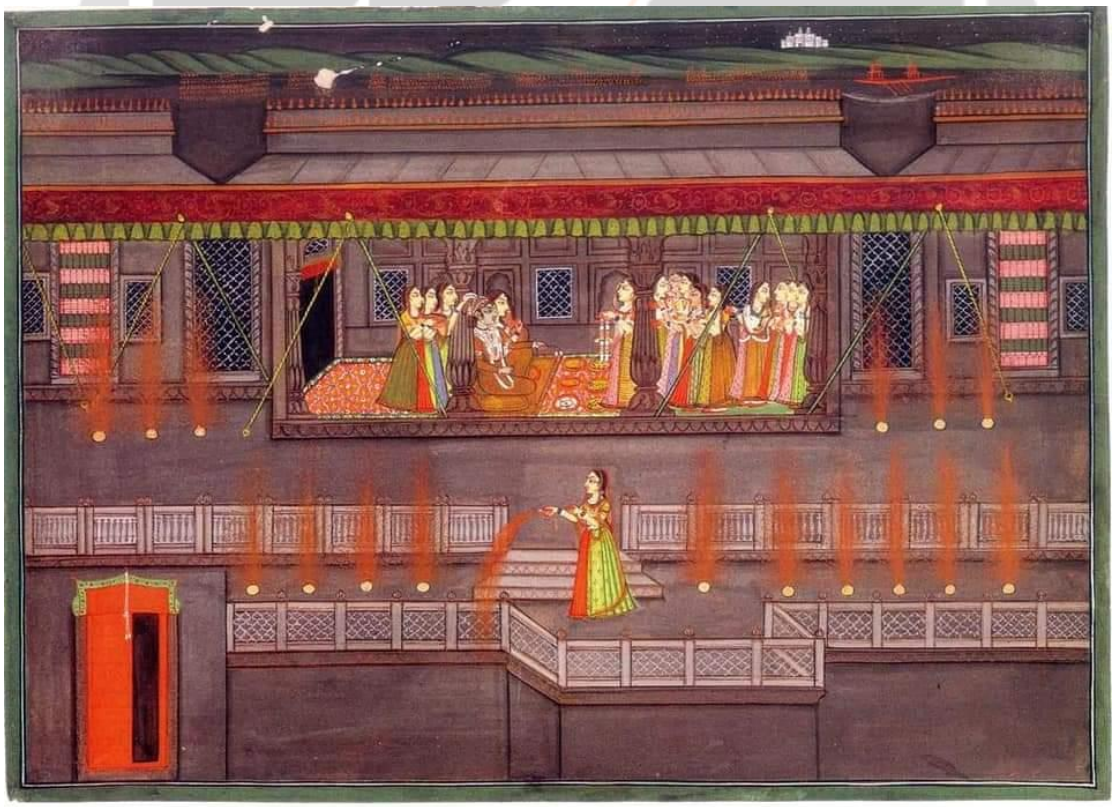

दीवाली के दौरान मिट्टी के दीये जलाना एक पुरानी और महत्वपूर्ण परंपरा है। यह दीया न केवल प्रकाश का स्रोत है, बल्कि यह हमारी संस्कृति और अध्यात्म का भी प्रतीक है। मिट्टी का दीया हमारी देह का

प्रतीक है, जो मिट्टी से बनी है, और उसमें जलती हुई ज्योति हमारे आत्मा का प्रतीक है, जो प्रकाश और जीवन का स्रोत है।

आत्मदीप का मतलब है आत्मा का प्रकाश। हमारे पूर्वजों ने दीवाली के पर्व को केवल बाहरी अंधकार को दूर करने के लिए नहीं, बल्कि हमारे अंदर के अंधकार को भी दूर करने के लिए मनाया। दीवाली का असली मतलब है आत्मा के भीतर की रोशनी को जगाना, जो ज्ञान, प्रेम, और शांति का प्रतीक है।

इस प्रकार, दीवाली का पर्व केवल दीपों का उत्सव नहीं है, बल्कि यह आत्मा के आलोकित होने का भी उत्सव है। यह हमें यह सिखाता है कि सच्चा प्रकाश और खुशियाँ हमारे भीतर ही हैं और हमें इसे पहचानने और स्वीकारने की जरूरत है। दीवाली का यह पर्व हमें आत्मबोध और आत्मज्ञान की ओर प्रेरित करता है, जो हमारे जीवन को सही दिशा में मार्गदर्शन करता है।

ऐतिहासिक और धार्मिक संदर्भ

दीवाली का सबसे महत्वपूर्ण संदर्भ भगवान राम की लंका विजय के बाद अयोध्या वापसी से जुड़ा है। इस दिन अयोध्या के घर-घर में दीये जलाए गए थे, जिससे पूरी मानवता रामराज्य के उत्कृष्ट मूल्यों से आलोकित हो उठी थी। यह दिन अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है।

भगवान राम की लंका विजय और अयोध्या वापसी

दीवाली का पर्व मुख्य रूप से भगवान राम के जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना से जुड़ा है। जब भगवान राम ने अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ 14 वर्षों का वनवास समाप्त किया और लंका के राजा रावण का वध करके अयोध्या लौटे, तब अयोध्यावासियों ने दीप जलाकर उनका स्वागत किया। यह घटना हमें यह सिखाती है कि सत्य और धर्म की जीत हमेशा होती है, चाहे परिस्थितियाँ कितनी भी कठिन क्यों न हों। अयोध्या के घर-घर में जलाए गए दीये इस बात का प्रतीक थे कि भगवान राम के आगमन से पूरा नगर रोशनी से भर गया था, और रामराज्य के उत्कृष्ट मूल्यकृसत्य, धर्म, न्याय और प्रेमकृसे आलोकित हो उठा था।

रामराज्य और उत्कृष्ट मूल्य

रामराज्य को भारतीय संस्कृति में आदर्श शासन का प्रतीक माना जाता है। यह वह समय था जब समाज में न्याय, शांति, और समृद्धि का वास था। दीवाली के पर्व पर जलाए गए दीये इस बात का प्रतीक हैं कि रामराज्य के मूल्य और आदर्श हमेशा हमारे जीवन को रोशन करते रहेंगे। यह पर्व हमें यह याद दिलाता है कि हमें अपने जीवन में भी इन मूल्यों को अपनाना चाहिए और अपने समाज में न्याय, शांति, और प्रेम को बढ़ावा देना चाहिए।

अंधकार पर प्रकाश की विजय

दीवाली का पर्व अंधकार पर प्रकाश की विजय का प्रतीक है। यह हमें यह सिखाता है कि अज्ञान, अंधकार, और बुराई पर ज्ञान, प्रकाश, और अच्छाई की हमेशा जीत होती है। भगवान राम के जीवन की कथा हमें यह सिखाती है कि कठिनाइयों और चुनौतियों का सामना करके ही हम सच्चे अर्थों में विजयी बन सकते हैं। जब हम अपने जीवन में भी अंधकार का सामना करते हैं, तो हमें यह याद रखना चाहिए कि दीपावली का पर्व हमें यह संदेश देता है कि हम अपने भीतर की ज्योति को प्रज्वलित करके हर अंधकार को दूर कर सकते हैं।

अन्य धार्मिक संदर्भ

दीवाली का पर्व केवल हिन्दू धर्म के अनुयायियों द्वारा ही नहीं, बल्कि जैन, सिख और बौद्ध धर्म के अनुयायियों द्वारा भी मनाया जाता है। जैन धर्म में, दीवाली को भगवान महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में मनाया जाता है। सिख धर्म में, इस दिन को बंदी छोड़ दिवस के रूप में मनाया जाता है, जब गुरु हरगोविंद जी ने मुगलों के बंदीगृह से 52 राजाओं को मुक्त किया था। बौद्ध धर्म में, इसे सम्राट अशोक के बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने के दिन के रूप में माना जाता है। इन सभी संदर्भों में, दीवाली का पर्व अंधकार पर प्रकाश, अज्ञान पर ज्ञान, और बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है।

समापन

इस प्रकार, दीवाली का पर्व केवल दीपों का उत्सव नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन के हर पहलू में प्रकाश और ज्ञान का प्रतीक है। भगवान राम की लंका विजय और अयोध्या वापसी से जुड़ी यह कहानी हमें यह सिखाती है कि सत्य, धर्म, और न्याय की हमेशा जीत होती है। यह पर्व हमें अपने जीवन में भी इन उत्कृष्ट मूल्यों को अपनाने और समाज में शांति, प्रेम, और समृद्धि को बढ़ावा देने की प्रेरणा देता है।

संदर्भ:

- रामायण:- वाल्मीकि रामायण, अयोध्याकांड, युद्धकांड।

- महाभारत: - महाभारत, अनुशासन पर्व, शांति पर्व।
- भगवद गीता: - भगवद गीता, अध्याय 2, श्लोक 20-30।
- जैन धर्म के ग्रंथ: - कल्पसूत्र, जैन आगम साहित्य।
- सिख धर्म के ग्रंथ सिख इतिहास गुरु हरगोविंद जी और मुगलों के बंदीगृह से राजाओं की मुक्ति।
- बौद्ध धर्म के ग्रंथ: अशोकवदन, दीपवंश।
- ऐतिहासिक और सांस्कृतिक लेख: भारतीय इतिहास अनुसंधान पत्रिका, संस्कृति और परंपरा विषयक लेख।
- लोक साहित्य:- भारतीय लोककथाएं, महादेवी वर्मा की कविताएं।
- पुरातात्विक प्रमाण: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण रिपोर्ट।